'तुम्हें बदलना ही होगा' उपन्यास में चित्रित स्त्री चेतना

माधनुरे राहुल
शोधार्थी (हिंदी विभाग)
उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद,
Email. Rahulmadhnure358@gmail.com
Phone no: 6305397692

भूमिका–

भारतीय हिन्दू समाज व्यवस्था द्वारा निर्मित वर्ण–व्यवस्था एवं जातिभेद के प्रतिरोध की उपज है दलित साहित्य । जब हम दलित साहित्य के आन्दोलन की बात करते हैं, तो भारतीय समाज व्यवस्था में दलित स्त्री लेखन प्रमुखता से मनु द्वारा निर्धारित नैतिकता और पितृसत्तात्मक व्यवस्था का विरोध करता हुआ दिखाई देता है । वर्तमान में डॉ. आंबेडकर के विचारों से प्रभावित होकर दलित स्त्री अपने आत्मसम्मान की बात कर रही है । वर्तमान समय में दलित स्त्री अपने अधिकारों के प्रति सचेत हैं तथा वह पुरुष के समान ही आर्थिक, सामाजिक तथा राजनितिक क्षेत्रों में समानता की मांग करने लगी है । शिक्षित दलित नारी बंधन मुक्ति की प्रबल भावना से सामाजिक कुरीतियों का विरोध करने लगी है । साथ ही ग्रामीण महिलाएँ भी अपने अधिकार की लडाई लड़ रही है । शैक्षिक क्षेत्र में पुरुषों के समान अपना योगदान दे रही है । वर्तमान समय मी प्रमुख महिला लेखिकाओं में से एक सुशीला टाकभौरे है । जिनका दलित स्त्री चिन्तक के रूप में महत्वपूर्ण योगदान है, उनका व्यक्तित्व प्रभावकारी है । इनके साहित्य में दलित और स्त्री चेतना का स्वर उभरकर प्रस्तुत दिखाई देता है । वर्तमान समय में पिछड़े वर्ग के समस्या को उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से पाठकों तक पहुँचाने का कार्य किया है ।

बीज शब्द– दलित समाज, दलित स्त्री, जाति व्यवस्था, स्त्री चेतना का स्वर, आंबेडकर कि वैचारिकता, शैक्षणिक चेतना,

सामाजिक कार्य और सावित्रीबाई फूले की वैचारिकता

भारतीय समाज में स्त्री चेतना का स्वर अत्यंत ज्वलंत है । जैसे शिक्षा के सम्बन्ध में सावित्रीबाई फुले का महत्वपूर्ण योगदान रहा है । उसी तरह वर्त्तमान समय में स्त्री चेतना के लिए साहित्यकारों की भूमिका महत्वपूर्ण है, उन्होंने स्त्री चेतना का स्वर अपने साहित्य के माध्यम से समाज तक पहुँचाया है । जैसे प्रस्तुत उपन्यास में महिमा एक महिला सभा में कहती है कि "सावित्रीबाई फुले हमारी प्रेरणा स्त्रोत हैं? यहाँ उपस्थित महिलाओं में ऐसी कितनी महिलाएं है जो सावित्रीबाई फुले की तरह दलित–पिछड़ी जाति की लड़कियों को शिक्षा दिलवाने का प्रयत्न कर रही है या उनकी शिक्षा में अपना सहयोग दे रही है? सावित्रीबाई फुले अभियान को हम स्त्रियों को पूरा करना है ।"[1] इस प्रकार लेखिका ने महिमा के माध्यम से सावित्रीबाई फूले के महत्त्व को रेखांकित किया है साथ ही समाज में बढ़ते महिलाओं पर बलात्कार महिलाओं का दैहिक शोषण इस अन्याय अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाने को कहती है । जैसे कि "सावित्रीबाई फुले ने अपने समय में ये काम बहुत संघर्ष के साथ, समाज का विरोध सहकर किए थे क्योंकि पहले के समय के लोग अधिक धर्मान्ध, कर्मकांडी और स्त्री विरोधी थे । आज के समय में ये कार्य इतना कठिन नहीं है । इसके लिए एकता और संगठन की जरुरत है । हम एक साथ मिलकर, स्त्री शोषण का विरोध करके, स्त्रियों को न्याय दिला सकते हैं ।"[2] इस प्रकार उपन्यास में स्त्री चेतना और सावित्रीबाई फूले के योगदान को महत्वपूर्ण माना गया है । प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका ने समाज में महिलाओं की बदलती स्थिति को चित्रित किया है । आज महिलाएँ समाज में प्रचलित

पुरानी परम्पराओं को तोड़कर आगे बढ़ रही हैं । वर्णवादी पुराणपंथी देश अब शिक्षा और वैज्ञानिक प्रगति से जुड़कर आधुनिक बनता जा रहा है, इसलिए महिलाएँ भी वर्णभेद और जातिभेद का विरोध करने के लिए पुरुषों के साथ सडकों पर उतरने लगी हैं । नए विचारों की स्थापना के लिए प्रगति–परिवर्तन और समाज आन्दोलन के कार्य तेजी से चल रहे हैं । जैसे महिमा भारती कहती है कि "महाराष्ट्र के साथ पूरा उत्तर भारत और पूरा दक्षिण भारत ऐसे कार्यक्रमों से प्रभावित हो रहा है । धीरे–धीरे पूरे देश में फिर से नवजागरण की लहर दौड़ने लगी है । गाँव–गाँव और शहर–शहर के दलित पिछड़े लोग और शोषित महिलाएँ अपने अधिकारों के लिए अपने गाँव से दिल्ली राजधानी तक पहुँच रहे हैं ।"[3] इस प्रकार वर्तमान समय में दलित समाज की महिलाएँ मनुवादी व्यवस्था का विरोध करते हुए, अपने आत्मसम्मान और अधिकार की लडाई लड़ रही हैं । शिक्षा के माध्यम से जागृत होकर विविध कार्यक्रमों द्वारा दलित समाज में परिवर्तन लाने का प्रयत्न कर रही है । जगह–जगह धरने, प्रदर्शन और आन्दोलन करके सवर्णवादी व्यवस्था का विरोध कर रही हैं ।

डॉ. अंबेडकर कहते है कि शिक्षित बनो, संगठित रहो और संघर्ष करो अंबेडकर के विचारों को मानते हुए तीनों ने मिलकर इस पद के लिए अपना संघर्ष करते हुए इस उपन्यास की नायिका महिमा भारती गुस्से से कहती है कि "आपने हमें धोखे में रखा हमारे साथ गद्दारी की, हमें बेवकूफ बनाते रहे, तुम्हे शर्म नहीं आती, ऐसे नीच हरकत करते हुए? इंसानियत नाम की कोई चीज है तुम्हारे पास? बैमानी की रोटी खाते हो बैमान... और गुस्से के साथ महिमा, अपने हाथ की चप्पल पांडे जी के सामने रखी टिन के टेबल पर फटा–फट मरने लगी । पांडे आवाज से ही भयभीत हो गए ।"[4] इस प्रकार महिमा भारती अपने अधिकार के लिए संघर्ष करती है क्योंकि अपने अधिकार का हनन होते हुए वह देख नहीं सकती है । इसलिए क्रोध में आकर पांडे जी पर भड़क जाती है । तब राकेश पांडे को महिमा भारती का यथार्थ ज्ञान हुआ, प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका ने शैक्षणिक चेतना को चित्रित किया है । इस उपन्यास की मीरा की एकमात्र बेटी माया मैट्रिक तक की पढाई कर सकी, आगे की पढाई में उसका मन नहीं लगा उसका अधिकतर समय पत्र–पत्रिकाएँ एवं टेलीविजन में चला जाता है । "मीरा और सुरजन की बड़ी अभिलाषा थी कि वे अपनी बेटी को डॉक्टर बनाएँगे । उन्होंने उसे विज्ञान विषय लेकर पढाई करने के लिए मजबूर किया । माया बारहवी कक्षा में फेल होती रही । इसके बाद उसने साइंस पढ़ने से साफ इंकार कर दिया । हताश होकर सुरजनसिंह ने उसे आर्ट्स के विषय लेकर बारहवीं कक्षा की परीक्षा में बैठाया । पास होने के बाद उसे बी.एड. की शिक्षक ट्रेनिंग करवाई । ट्रेनिंग के बाद उसे जल्द ही प्राइमरी में शिक्षिका की नौकरी मिल गयी । सुरजन ने इस बात से ही संतोष कर लिया कि "मेरी बेटी न सही, मेरे बड़े भाई की बेटी महिमा उच्च शिक्षा पा रही है । आगे चलकर वह उच्च पद पर नौकरी करेगी और अपने खानदान का नाम रोशन करेगी ।"[5] इस प्रकार लेखिका ने अपने उपन्यास में शैक्षणिक चेतना को अभिव्यक्त किया है । यहाँ यह स्पष्ट हो जाता है कि बच्चों पर जबरदस्ती थोपी हुई शिक्षा काम नहीं आती । क्योंकि जिस विषय में रूचि न हो उसमें सफलता मिलना बहुत कठिन है । मीरा और सुरजन माया को डॉक्टर बनाना चाहते थे इसलिए उसे साइंस के विषय लेकर जबरदस्ती पढ़ने को कहा था । लेकिन माया की रूचि साइंस के विषय में नहीं थी, इसलिए वह बार–बार फेल हो रही थी । और शिक्षा से दूर जा रही थी । अतः पिता ने आर्ट्स विषय लेकर पढाया तो वह पास होकर बी.एड की ट्रेनिंग लेकर वह एक शिक्षिका बन जाती है । इसलिए शिक्षा के लिए रूचि का होना अत्यंत आवश्यक है । उपन्यास में महिमा एक प्रतिभाशाली छात्रा है वह अपनी मेहनत से उच्च शिक्षा प्राप्त करती और अपने परिवार का सपना पूरा करती है । जैसे कि "महिमा खुश थी । अब वह उस मुकाम तक पहुच गई थी, जहाँ अच्छी नौकरी के साथ मान–सम्मान और धन–वैभव सब कुछ मिल सकता है । मैट्रिक के बाद दिल्ली विश्विद्यालय से उसने बी.ए. और एम.ए. की डिग्री प्राप्त की थी । हिंदी साहित्य में प्रथम श्रेणी में एम.ए. करने के बाद उसने पीएचडी की डिग्री प्राप्त की । इसके साथ ही वह समाचार पत्रों में नौकरी की तलाश करने लगी थी ।"[6] इस प्रकार महिमा अपनी लगन से उच्च शिक्षा हासिल करके नौकरी की तलाश करने लगती है और सफलता भी प्राप्त

करती है । महिमा ने जब उच्च शिक्षा प्राप्त की तब उसने अपने समाज को अतीत से परिचित करवाया जिसमें मुख्य रूप से उसने दशहरे के बारे में समझाते हुए कहती है कि "सम्राट अशोक का धम्म चक्र परिवर्तन दिन हर वर्ष मनाया जाता है । डॉ. अंबेडकर की दीक्षाभूमि नागपुर में पूरे देश से हजारों की संख्या में लोग आकार इस दिन का उत्सव मनाते है । इन दिनों पूरा नागपुर शहर पूरी तरह बौद्धमय बन जाता है । बाहर से आए हजारों लोगों के लिए नागपुर के अंबेडकरवादी लोग भोजन और निवास की व्यवस्था करते हैं । विजयादशमी के एक दिन पहले और एक दिन बाद तक दीक्षाभूमि में अनेक बौद्धिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं । डॉ. अंबेडकर के सामाजिक आन्दोलन के और तथागत गौतम बुद्ध की वंदना के गीत संगीत का भी आयोजन होता है ।"[7] इस प्रकार महिमा धम्म चक्र परिवर्तन दिन की हकीकत शोभा के माता–पिता को समझाती है । अतः कहा जा सकता है कि दलित समाज में शिक्षा की कमी होने के कारण उन्हें सच्चाई से रू–ब–रू नहीं करवाया जाता है । क्योंकि इन लोगों को सच्चाई से परिचित करवाने वाला कोई नहीं दिखाई देता है । अगर दलित समाज के पढ़े–लिखे युवक–युवतियाँ गाँव–गाँव जाकर महिमा भारती की तरह मार्गदर्शन करे तो, शोभा जैसे अनेकों के दिल में परिवर्तन लाकर बाबासाहब के सपनों को पूर्ण किया जा सकता है । इस प्रकार दलित समाज के लिए धम्मचक्र परिवर्तन दिन का अपना एक महत्त्व है क्योंकि इसी दिन डॉ. अंबेडकर ने हिन्दू धर्म को त्याग कर अपने लाखों अनुयाइयों के साथ बौद्ध धर्म की दीक्षा ली थी ।

प्रस्तुत उपन्यास में महिमा एक अध्यापिका बनकर समाज कार्य के साथ शिक्षा का भी अपने समाज में महत्व बताती है । जिस प्रकार शोभा के माता–पिता उसकी पढाई के बजाए उसकी शादी की चिंता में लगे रहते है लेकिन महिमा के समझाने के बाद वे समझ जाते है । महिमा की बातों से प्रभावित होकर धन्नो कहती है कि "नहीं मैडम, मैं अपने बच्चों की पढाई कभी नहीं रुकने दूंगी।"[8] इस प्रकार लेखिका ने महिमा के माध्यम से दलित समाज में शैक्षणिक चेतना के महत्त्व को अभिव्यक्त किया है । उपन्यास में दलित समाज के प्रति शैक्षणिक जागरूकता का स्वर सुरजन, महिमा भारती, धीरज कुमार, शोभा आदि पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है ।

अतः यह कह सकते है कि उपन्यास में भारतीय महिला की यथार्थ स्थिति को अभिव्यक्त किया है । वर्तमान समय की महिलाएँ किसी रूप में कमजोर नहीं है । उनमें सामाजिक चेतना का स्वर जागृत हो चुका है और समाज कार्य करने के लिए सामाजिक संगठनों से जुड़कर कार्य कर रही है साथ ही अनपढ़ और शिक्षित घरेलु काम करने वाली महिलाओं को जागृत कर रही है जैसे उपन्यास में महिमा भारती, माया, उषा बजाज, शोभा आदि साहसी महिलाएँ किसी रूप में कमजोर नहीं है । महिमा भारती एक सफल सामाजिक कर्यकर्ता के रूप में उभरकर आयी है इसी प्रकार उषा और शोभा भी प्रतिभाशाली छात्रा है उनमें कुछ कर दिखाने की उमंग है । यही स्त्री चेतना स्वर है जो वर्तमान समाज की महिलाओं की यथार्थ स्थिति है । इस वास्तविकता को लेखिका ने बड़ी मार्मिकता के साथ अभिव्यत किया है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. सुशीला टाकभौरे, तुम्हें बदलना ही होगा, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2015 पृ,82
2. वही, पृ,82
3. वही, पृ,12
4. वही, पृ,24
5. वही, पृ,13
6. वही, पृ,16
7. वही, पृ,58
8. वही, पृ,57